डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी द्वारा 'मजरूह सुल्तानपुरी जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी' का शुभारंभ

मजरूह तरक़्क़ीपसंद एवं इंकलाबी शायर थे – गोपीचंद नारंग

नई दिल्ली, 29 नवंबर 2019। साहित्य अकादेमी द्वारा आज प्रख्यात उर्दू शायर और गीतकार 'मजरूह सुल्तानपुरी की जन्मशतवार्षिकी को मनाने के लिए दो दिवसीय संगोष्ठी का शुभारंभ किया गया। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने की। उद्घाटन वक्तव्य साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष एवं महत्तर सदस्य गोपीचंद नारंग ने तथा आरंभिक वक्तव्य उर्दू परामर्श मंडल के संयोजक शीन काफ़ निज़ाम द्वारा दिया गया। बीज वक्तव्य प्रख्यात उर्दू समालोचक अर्जुमंद आरा ने प्रस्तुत किया।

अपने उद्घाटन वक्तव्य में प्रोफेसर गोपीचंद नारंग ने कहा कि मजरूह सुल्तानपुरी एक सच्चे, तरक्की पसंद और इंकलाबी शायर थे। उन्होंने अपने जीवन में अनेक उपेक्षाओं को सहा लेकिन अपनी बात कहने का फन नहीं बदला। प्रोफेसर गोपीचंद नारंग ने उनके जीवन से जुड़े बहुत से प्रसंगों को याद करते हुए बताया कि वे नज़्मों की उस प्राथमिकता के दौर में भी अपनी गज़लों और फ़िल्मी गीतों से अपनी बात सारे समाज के सामने रखते रहे। गज़लों को कितना भी हुस्न और माशूक से जोड़ा जाता रहा फिर भी वे अपने इंकलाब और आज़ादी के स्वर को अपने कलाम में पेश करते रहे।

अपने आरंभिक वक्तव्य में उर्दू परामर्श मंडल के संयोजक शीन काफ़ निज़ाम ने कहा कि सुल्तानपुर से अलीगढ़ और वहाँ से मुम्बई तक की उनकी यात्रा बेमिसाल है। उन्होंने आला और आसान दोनों तरह की शायरी बहुत ही उम्दा तरीके से की। हालांकि तरक़्क़ी पसंद लोग उस समय गज़ल के स्थान पर नज़्मों को प्राथमिकता दे रहे थे। लेकिन मजरूह ने अपनी ग़ज़लों से ज़िद की तरह प्यार बनाए रखा।

अपने बीज वक्तव्य में अर्जुमंद आरा ने कहा कि सामाजिक और राजनीतिक उथल–पुथल के समय मजरूह सुल्तानपुरी ने विभिन्न आदर्शों के बीच उर्दू शायरी को महज मोहब्बत के सब्ज़ बागों से निकाल कर दुनिया के अन्य अँधेरे और उजले पहलुओं से भी जोड़ा। साथ ही, उन्होंने रूमानियत को भी नया रंग और ताज़गी दी।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में साहित्य के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि मजरूह सुल्तानपुरी ने मंच और सिनेमा के लिए लिखी गई अपनी शायरी में भाषाओं और विचारों का बेहद संतुलन रखा और दोनों ही माध्यमों के लिए उत्कृष्ट लेखन किया। कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि मजरूह एक ऐसे शायर थे जिनके कलाम में समाज का दर्द झलकता था। उन्होंने ज़िंदगी को एक दार्शनिक के नज़रिये से देखा और उर्दू शायरी को नए आयाम दिए। उनके लिखे फ़िल्मी गीतों में भी एक नयापन और अपनापन महसूस किया जा सकता है।

कार्यक्रम में उर्दू के कई प्रतिष्ठित साहित्यकार और लेखक तथा विश्वविद्यालयों के शोधार्थी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने किया। कल संगोष्ठी के दूसरे दिन (30 नवंबर 2019) तीन सत्र नुसरत ज़हीर, अतीकुल्लाह एवं शहजाद अंजुम की अध्यक्षता में आयोजित किए जाएँगे जिनमें मजरूह सुल्तानपुरी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विभिन्न पहलुओं पर विचार किया जाएगा।

29/11/2019

(के. श्रीनिवासराव)

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone : +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax : +91-11-2338 2428
E-Mail : secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website : http//www.sahitya-akademi.gov.in

مجروح سلطانپوری صدی سمینار

मजरूह सुल्तानपुरी जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

29-30 November 2019, New Delhi

MINISTRY OF CULTURE · GOVERNMENT OF INDIA
संस्कृति मंत्रालय · भारत सरकार
साहित्य
مجروح سلطانپوری صدی سمینار
मजरूह सुल्तानपुरी जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी
29-30 November 2019, New Delhi
अर्जुमंद आरा
ارجمند آرا
गोपी चंद नारंग
گوپی چند نارنگ
माधव कौशिक
شین کاف نظام

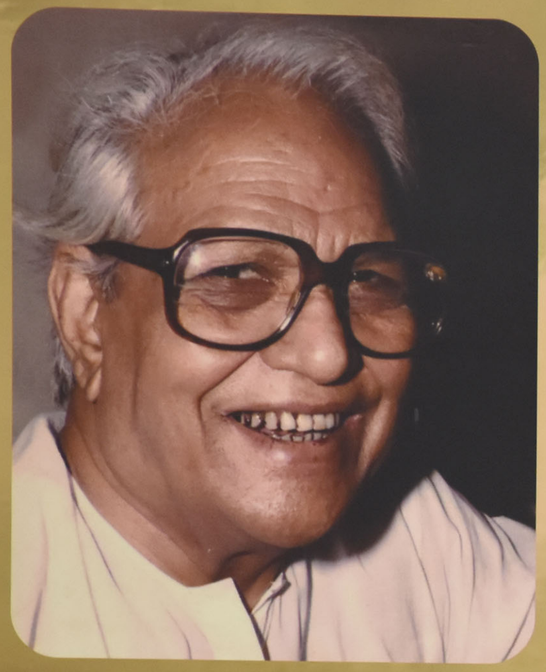

MINISTRY OF CULTURE · GOVERNMENT OF INDIA
संस्कृति मंत्रालय · भारत सरकार
सत्यमेव जयते

साहित्य

مجروح سلطانپوری صدی سمینار

मजरूह सुल्तानपुरी जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

29-30 November 2019, New Delhi